श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. : ६ ◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ Answer sheet

ऐनरोलमेन्ट नंबर ६ शहर

विद्यार्थी का नाम

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	क्षपक श्रेणी
(२)	तेइन्द्रिय
(३)	सिद्धियोग
(४)	निस्पृहन
(५)	ध्यान की शुद्धता
(६)	शांतिनाथ भगवान
(७)	वचन अनुष्ठान
(८)	सूर्यदेवता
(९)	एक समय
(१०)	आसनजय
(११)	उपशमादि
(१२)	गोपाल
(१३)	एक पल्योपम
(१४)	पवन की प्रवृत्ति
(१५)	मात्रिक
(१६)	उपादेय
(१७)	संक्रम
(१८)	निवासस्थानोमें
(१९)	असंख्यात
(२०)	श्मशानभूमि

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	रेचक
(२)	मिथ्यात्वीओ
(३)	अनुकंपा
(४)	ज्ञानोपयोग ज्ञान
(५)	मिथ्यात्व के उदय
(६)	अग्निकाय
(७)	अननुष्ठान
(८)	प्रविचार
(९)	कवित्व
(१०)	श्री शांतिनाथभगवान
(११)	चित्त की शुद्धि
(१२)	सवितर्क
(१३)	आर्यसुहस्तिसूरि
(१४)	दीर्घायु होओ
(१५)	अंतर्मुहूर्त

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	आयुष्य
(२)	दो \ दिजिए
(३)	कंधे
(४)	तेंतीस

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	८	(६)	४
(२)	६	(७)	२
(३)	९	(८)	५
(४)	१	(९)	३
(५)	१०	(१०)	७

(५)	उन्हे
(६)	पहेचानवाले
(७)	श्रेणिवाले
(८)	करते है
(९)	पूज्य
(१०)	अनुक्रमे
(११)	मोहनीय की
(१२)	संघयण
(१३)	उत्कृष्ट आयुष्य
(१४)	पदों की
(१५)	क्षय होता है
(१६)	निकालने
(१७)	उपद्रव
(१८)	वर्ष
(१९)	दुःख रहा है
(२०)	जिसके द्वारा

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	3
(२)	१ पल्योपम
(३)	७
(४)	3
(५)	पु
(६)	८
(७)	१ करोड
(८)	५
(९)	१०
(१०)	१००

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	×	(१)	७
(२)	✓	(२)	१९
(३)	×	(३)	१५
(४)	✗	(४)	2
(५)	✓	(५)	20
(६)	×	(६)	११
(७)	×	(७)	४
(८)	✓	(८)	१७
(९)	✓	(९)	१३
(१०)	×	(१०)	१६

	+		+		+		+		+		+		+		=	
प्रश्न-१ मिले हुए गुण		प्रश्न-२ मिले हुए गुण		प्रश्न-३ मिले हुए गुण		प्रश्न-४ मिले हुए गुण		प्रश्न-५ मिले हुए गुण		प्रश्न-६ मिले हुए गुण		प्रश्न-७ मिले हुए गुण		प्रश्न-८ मिले हुए गुण		कुल गुण	

रीमार्क _____ जांचनेवाले की सही _____

प्रश्न - ८

१. आध्यात्म में श्वासोश्वास का नियमन बहुत ही महत्व का है। श्वासोश्वास जीवन के प्राण है। इसीलिये उसका नियमन "प्राणायम" के नामसे पहचाना जाता है। प्राणायम का स्वरुप इस तरह है - पूज्य मुनिवर पूरक ध्यान के योग से अत्यन्त प्रयत्न कर बारह अंगुल चारोओर से हवासे खिंचकर शरीर की सब नाडियों को पूर्ण भरता है वह पूरक प्राणायम है। पूरक प्राणायम के बादसाधक प्राणायम के अभ्यास के बलपर वायु को नाभिकमलसे धीरे धीरे बहुत प्रयत्नपूर्वक बहार निकालते है, जिसे रेचक प्राणायम कहते है। योगी कुम्भक नामक पवन को नाभि-कमल से कुंभक नामक ध्यान द्वारा घट के आकार में स्थिर करता है, उसे कुंभक प्राणायम कहते है। इन सब प्राणायमोंमें पवन का बहुत गहरा संबंध है। पवन को साधन बनाने से चित्त एकाग्र होता है और मन समाधि में निश्चल होता है।

२. सती बहेन के श्राप से बाण कवि को कुष्ठरोग होगया और दुसरे ही दिन बाणकवि के पहले ही मयूर कवि राजसभा में पहले जाकर बैठा था, उसने बाण कवि जब राजसभा में आया तब "आओ, आओ, कोढवाला बाण आया", ऐसे बोल और सब बात बताकर, प्रत्यक्ष बाण के अंगो पर के कोढ के सफेद दाग बताये, जिससे भोजराजा ने बाण कवि को, जब तक उसे कोढ मिटता नही तब तक राजसभा में आने की, नगर में रहने की सख्त मनाई की, इससे बाण कवि का अपमान हुआ। तुरंत वो नगर के बाहर आ गया। उसने बहुत ही कठीण ऐसी सूर्यदेवता की उपासना की, जिससे उसे देखने के लिए लोगों की भीड आने लगी और उस भीड में ही सूर्यदेवता ने उसे प्रत्यक्ष दर्शन दिया और उसका कोढ दूर करके सुवर्णकांति जैसा शरीर कर दिया, जिससे राजाने उसे धामधूमसे दरबार में बुलाया।

३. तद्हेतु अनुष्ठान और अमृत अनुष्ठान ये दोनो अनुष्ठान आत्मा को मोक्षसे जोडनेवाली होने से योगस्वरूप है। योगस्वरुप सदनुष्ठान चार प्रकार के है। द्रव्य, क्षेत्र, काल आदि सामग्री की परिपूर्णता न होते हुये भी शास्त्रोक्त विधि, आराधना, आराधने की क्रिया, जिसमें महात्माओं के प्रति बहुमान जागता है, और उल्लासपूर्वक अनुष्ठान करने में आते है वह "इच्छायोग"। उपशम विशेष, शास्त्रोक्त आराधना का अनुसरण, अत्यंत उल्लासपूर्वक क्रिया का आचरण वह "प्रवृत्ति योग" होता है। प्रवृत्तियोग में क्रिया अतिचार सहित होती है, पर जिससे जो स्थिरता पूर्वक क्रिया, वह "स्थिरयोग" अनुष्ठान। साधना में आगे बढते जीवों के सानिध्य में आने वाले जीव भी स्वयं के स्वभाव में परिवर्तन पाते है। इसकी सिद्धी आजुबाजु के वातावरण के जीवों को स्पर्शती है, उसे "सिद्धियोग" कहा जाता है।

४. मनुष्योंके विषय में बारह उपयोग होते है। नारकी, तिर्यंच और देवताओंको नौ उपयोग होते है। द्विइन्द्रिय और तेउन्द्ररुप विकलेंद्रिय को दो दंडक के विषयमें पंच उपयोग और चउरिन्द्रिय को छह उपयोग होते है। स्थावर को तीन उपयोग होते है। पदार्थ के सामान्य धर्म का उपयोग - दर्शन के आधार पर उसके चार भेद है। १) चक्षुदर्शन उपयोग २) अचक्षुदर्शन उपयोग ३) अवधिदर्शनोपयोग ४) केवलदर्शनोपयोग पदार्थ के विशेष धर्म का उपयोग व्यापार वह ज्ञानोपयोग। ज्ञान एवं अज्ञान के आधार पर उसके भी आठ भेद है। १) मतिज्ञानोपयोग २) श्रुतज्ञानोपयोग ३) अवधिज्ञानोपयोग ४) मनःपर्यवज्ञानोपयोग ५) केवलज्ञानोपयोग ६) मतिअज्ञानोपयोग ७) श्रुतअज्ञानो-पयोग ८) विभंगज्ञानोपयोग। दर्शन के चार और ज्ञान-अज्ञान के आठ कुल मिलकर १२ उपयोग है।

५. वृद्धवादिसूरि तो पहले कुमुद नाम के विप्र थे जिन्होने वृद्धावस्था में दीक्षा ले ली जिससे उन्हे विद्या चढती नही थी इसलीये वो रात में भी जोर जोरसे बोलकर याद करते थे। गुरुमहाराजने मना करने से वो दिन में उंची आवाज में और उंची आवाज में याद करने लगे तो श्रावकोंने कहा की, यह जोरजोर से बोलकर पूरा दिन रट-रट करते है, तो ये क्या मुसल फुलायेंगे? इन वचनों से वो बहुत शरमागये और उन्होंने सरस्वतीदेवी की आराधना की। इक्कीसवे उपवास के दिन देवी प्रसन्न हो गयी और वरदान दिया की "सर्व विद्या का पारगामी होगा, तू जैसा करेगा वैसा मै तुझे करके दुंगी।" इस वरदान का उपयोग करके उन्होंने चौक में जाकर मुसल को फुला दिया, जिससे